पाठ - 10 **मार्च 3-9**

भण्डारीपन की भूमिका

सब्त अपराह्न **मार्च 3**

इस सप्ताह के अध्ययन के लिये पढ़ें : कुलु० 1:16-18; इब्रा० 4:14-16; 3यूहन्ना 3; उत्प० 6:13-18; प्रका० 14:6-12; 1पत० 1:15-16.

याद वचन: *"क्योंकि परमेश्वर ने हमें अशुद्ध होने के लिये नहीं, परन्तु पवित्र होने के लिये बुलाया है" (1थिस्सलुनीकियों 4:7)।*

भण्डारीपन की गहराई और चौड़ाई के कारण बड़ी तस्वीर में खो जाना सहज है, इसकी नृशंसता से अभिभूत हो जाना और स्पर्श रेखा द्वारा उलझना सहज है। भण्डारीपन सामान्य है तथापि कठिन भी है, और इसलिये सहजता इसे गलत समझ लिया जाता है। फिर भी न तो मसीही न ही कलीसिया इसके बिना अस्तित्व में आ सकती है या कार्यान्वित हो सकती है। मसीही होना एक अच्छा भण्डारी होना भी है।

"यह न तो सिद्धांत है न ही दर्शन परन्तु एक काम-काज का कार्यक्रम है। यह जीने की मसीही व्यवस्था की सत्यता में है . . . . . यह जीवन की समुचित जानकारी, और एक सत्य, सर्वोत्तम धार्मिक अनुभव है। यह सामान्यतया मानसिक सहमति का विषय नहीं है, परन्तु इच्छा शक्ति का एक कार्य है और एक निश्चित, निर्णायक स्पर्श करने वाला सौदा जो जीवन का सम्पूर्ण परिमाप है।" ली रोय ई० फ्रूम, स्टीवार्डशीप इन इटस् लार्जर ऐस्पेक्टस्, पेज 5 ।

मसीही भण्डारी होने के अर्थ का अंतर्भागीय सिद्धांत क्या है? इस सप्ताह हम उस भूमिका पर अधिक ध्यान देंगे जो भण्डारीपन निभाता है। हम ऐसा एक रोचक समानता रथ चक्र द्वारा करेंगे।

रविवार **मार्च 4**

मसीह केंद्र के रूप में

यीशु सम्पूर्ण बाईबल में केंद्रीय आकृति है (यूहन्ना 5:39) और हमें स्वयं को उसके संबंध में देखने की आवश्यकता है। उसने पाप के दण्ड का भुगतान किया और "बहुतों के लिये छुड़ौती" है (मार्क 10:45)। यीशु का

- सब्त मार्च 10 की तैयारी के लिये इस सप्ताह के पाठ का अध्ययन करें।

पूरा अधिकार स्वर्ग और पृथ्वी में है (मत्ती 28:18), और सारी चीजें उसके हाथों में हैं (यूहन्ना 13:3)। अन्य सभों से उसका नाम उच्चतर है, और एक दिन हरेक घुटना उसके नाम पर टेकेगा (फिलि० 2:9-11)।

"यीशु प्रत्येक चीज का जीवित केंद्र है।" – एलेन जी० ह्वाईट एवंजेलिज्म, पेज 186 ।

मसीह हमारे भण्डारीपन का हृदय है और हमारी भक्ति का स्रोत है। उसके कारण हम जीने लायक जीवन निर्माण करते हैं, सबकुछ प्रदर्शित करते हुए कि वह हमारे जीवनों का केंद्र बिन्दु है। पौलुस ने बहुत से क्लेशों का सामना किया होगा, परन्तु कोई बात नहीं वह कहाँ था अथवा उसके साथ क्या हुआ, जीने की उसकी एक ही प्राथमिकता थी: "क्योंकि मेरे लिये जीवित रहना मसीह है, और मर जाना लाभ है" (फिलि० 1:21)।

पढ़ें कुलु० 1:16-18, रोमियों 8:21, एवं 2कुरि० 5:17, वे हमें क्या बतलाते हैं कि यीशु प्रत्येक चीज के विषय हमारे लिये कितना केंद्र है?

_____

_____

हमारे केंद्रीय अंतर्भाग में मसीह के बिना कोई वास्तविक भण्डारीपन नहीं (गला० 2:20)। वह "उस धन्य आशा" का केंद्र है (तीतुस 2:13), और "वही सब वस्तुओं में प्रथम है, और सब वस्तुएँ उसी में स्थिर रहती हैं (कुलु० 1:17)। जिस प्रकार धुरी चक्र का केंद्र होती है और इस प्रकार एक गाड़ी के वजन को ढोती है, मसीह भण्डारी के जीवन का केंद्र है। जैसा कि एक ठोस (मजबूत) धुरी स्थिरता प्रदान करती है, चक्रों को घूमने की स्थिति में लाते हुए, वैसा ही यीशु भी हमारे मसीही अस्तित्व का निश्चित और स्थिर केंद्र है (इब्रा० 13:8)। प्रत्येक चीज हम सोचते और करते हैं उसका प्रभाव असर करना चाहिए। भण्डारीपन के सभी पहलू मसीह में अपना केंद्र पाते और (मसीह के) चारों ओर चक्र लगाते हैं।

"मुझसे अलग होकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते" (यूहन्ना 15:5)। भण्डारीपन का केंद्र एक खोखलापन नहीं है परन्तु जीवित मसीह की वास्तविकता है, जो हमारे चरित्रों को अभी और अनंत काल के लिये ढालने हेतु हम पर कार्य करता है।

यह कहने को एक चीज है कि यीशु हमारे जीवन का अंतर्भाग है, लेकिन जीना दूसरा है मानो कि वह है। आप कैसे आश्वस्त हो सकते हैं कि

सचमुच यीशु आप में जीवित है जैसे कि वह प्रतिज्ञा करता है वह चाहता है यदि हम चाहते हैं परन्तु उसे अन्दर आने देना है?

सोमवार **मार्च 5**

पवित्र स्थान का सिद्धांत

भण्डारीपन के संदर्भ में कोई साधारणतया पवित्रस्थान के विषय नहीं सोचता है। तथापि श्रृंखला है, क्योंकि पवित्र स्थान हमारे विश्वास विधि के प्रति अति महत्त्वपूर्ण है, और भण्डारीपन इस विधि का भाग है। "स्वर्गीय पवित्र स्थान में सेवकाई की सही समझ हमारे विश्वास की नींव है।"– एलेन जी० ह्वाईट, एवेन्जेलिज्म, पेज 221. यह आज्ञार्थ है कि हम इस बाईबलीय संदर्भ के प्रकाश में भण्डारीपन की भूमिका को समझते हैं।

पहला राजा 7: 33 एक रथ चक्र का वर्णन करता है। हम पवित्र स्थान के सिद्धांत को चक्र के केंद्र की तरह व्याख्या करेंगे। केंद्र धुरी से जुड़ा होता है और चक्र को जब यह घूमता है अधिक स्थिरता प्रदान करता है। मृत्यु और एक विजयी पुनरुत्थान का अनुभव करके (2तीमु०1: 10), मसीह अपनी मृत्यु के द्वारा पवित्र स्थान में अपने काम की नींव है (इब्रा० 6: 19-20)। और हमारे विश्वास के लिये स्थिरता प्रदान करता है। और यह पवित्र स्थान से है जो वह हमारे लिये इस पृथ्वी पर सेवकाई करता है (देखें इब्रा० 8: 1-2)।

"केवल पवित्रशास्त्र के सिद्धांत पर खड़े होकर, बाईबलीय ऐडवेंटिस्टवाद पवित्र शास्त्र के सिद्धांत के सामान्य परिप्रेक्ष्य से इसके सैद्धांतिक विधि का गठन करता है।" Fernando Canale, Secular Adventism? Exploring the link between lifestyle and Salvation (Lima: Peru, Peruvian Union University, 2013), pp. 104,105.

पवित्र स्थान में यीशु की सेवा के विषय ये पदस्थल हमें क्या बतलाते हैं? 1यूहन्ना 2: 1, इब्रा० 4: 14-16, प्रका० 14: 7.

_____

_____

_____

पवित्र स्थान का सिद्धांत उद्धार और मुक्ति के महान सत्य को उजागर करने में मदद करता है, जो सभी मसीही धर्म विज्ञान के अंतर्भाग में है। पवित्र स्थान में हम केवल मसीह की हमारे लिये मृत्यु ही को नहीं देखते हैं वरन स्वर्गीय पवित्र स्थान में उसकी सेवकाई को भी देखते हैं।

हम परम पवित्र स्थान में परमेश्वर की व्यवस्था की महत्ता को और अंतिम न्याय की वास्तविकता को भी देख सकते हैं। इन सभी का केंद्र मुक्ति की प्रतिज्ञा है जो यीशु के बहाये लहू के द्वारा हमारे लिये उपलब्ध कराया गया है।

भण्डारीपन की भूमिका उद्धार की महान सच्चाई में लंगर डाले हुए एक जीवन को प्रतिबिम्बित करती है, जैसा पवित्र स्थान के सिद्धान्त में प्रकट किया गया है। जितनी गहराई से हम समझते हैं कि मसीह ने हमारे लिये क्या किया है और अभी वह हममें क्या कर रहा है, उतना ही नजदीक हम मसीह के पास आते हैं, उसकी सेवकाई, उसका उद्देश्य, उसकी शिक्षा, और उनके लिये उसका उद्देश्य जो अपने जीवनों में भण्डारीपन के सिद्धान्तों को जीते हैं।

पढ़ें इब्रानी 4: 14-16, पाप, अहम और स्वार्थ के साथ हमारे स्वयं के संघर्ष में हमारे लिये यहाँ पर क्या पाया जाता है? यहाँ पर प्रतिज्ञा किये में से आशा और ताकत हम कैसे लेते हैं?

मंगलवार **मार्च 6**

मसीह-केंद्रित मत संबंधी विश्वास

पवित्र स्थान केंद्र है क्योंकि यह वहाँ है जहाँ उद्धार की महान सच्चाई सशक्त रूप से प्रकट की गई है, जहाँ पर क्रूस का अर्थ दर्शाया गया है। और हमारे सभी सिद्धांत एक या दूसरे तरीके से सुसमाचार की प्रतिज्ञा और उद्धार में जुड़ जाना चाहिए। पहिये (चक्र) की तीली (स्पोक) के समान, दूसरे सिद्धान्त यीशु में विश्वास के द्वारा उद्धार की महान सच्चाई से निकलते हैं।

"मसीह का बलिदान पाप के लिये एक प्रायश्चित के तौर पर महान सच्चई है जिसके चारों ओर सभी दूसरी वास्तविकताएँ झुण्ड बनाती हैं.... वे जो मुक्तिदाता के आश्चर्यजनक बलिदान का अध्ययन करते हैं अनुग्रह और ज्ञान में बढ़ते हैं।" -Ellen G. White Comments, The SDA Bible commentary, Vol. 5, p. 1137.

यूहन्ना 14: 6 में स्वयं को "सच्चाई" के तौर पर उद्धृत करने से यीशु का क्या अर्थ था? यूहन्ना 17: 17 से तुलना करें। सच्चाई के साथ हमें क्या करना है? 3यूहन्ना 3।

_____

_____

_____

हमारे मत संबंधी विश्वास प्रभावित करते हैं कि हम कौन हैं और किस दिशा पर जा रहे हैं। सिद्धान्त भाववाचक धर्मविज्ञान संबंधी विचार ही नहीं हैं; सब सत्य सिद्धांत यीशु पर स्थिर हैं, और सबको विभिन्न तरीके से प्रभावित करना चाहिए कि हम कैसे जीते हैं। वास्तव में एक व्यक्ति न्याय संगत रूप से कह सकता है कि सेवेंथ-डे-ऐडवेंटिस्ट के रूप में हमारी पहचान किसी अन्य की अपेक्षा सैद्धान्तिक शिक्षाओं पर आधारित है। तब शिक्षाएँ जो हम बाईबल से लेते हैं, हमें बनाती हैं कि सेवेंथ-डे-ऐडवेंटिस्ट के रूप में हम कौन हैं।

भण्डारीपन की भूमिका सैद्धान्तिक सच्चाई को जीना है जैसा यह यीशु में हैं, और एक तरह से ऐसा करना हमारे जीवन के स्वभाव को सकारात्मक रूप से प्रभावित करता है। "वरन तुम ने सचमुच उसी की सुनी, और जैसा यीशु में सत्य है, उसी में सिखाए भी गये कि तुम अगले चाल-चलन के पुराने मनुष्यत्व को जो भरमाने वाली अभिलाषाओं के अनुसार भ्रष्ट होता जाता है, उतार डालो। और अपने मन के आत्मिक स्वभाव में नये बनते जाओ। और नये मनुष्यत्व को पहिन लो, जो परमेश्वर के अनुसार सत्य की धार्मिकता, और पवित्रता में सृजा गया है" (इफि० 4:21-24)।

इस पद में हम पाते हैं कि इसका अर्थ केवल सच्चाई को जानना नहीं है वरन इसे जीना है। एक भण्डारी होना सिद्धान्तों पर विश्वास करना नहीं है, जौभी कि वे सिद्धान्त सत्य हैं; भण्डारी होना उन सच्चाईयों को हमारे जीवन में जीना है और दूसरों के साथ हमारी प्रतिक्रिया है।

बुधवार **मार्च 7**

तीन दूतों का संवाद

परमेश्वर ने संसार को आने वाली विपत्ति के विषय दो बार चेतावनी दी है: एक बार नूह को (उत्प० 6:13-18, मत्ती 24:37) और दूसरी तीन दूतों के संवाद के द्वारा (प्रका० 14:6-12)। ये संवाद भविष्य की दुनिया पर एक अद्वितीय परिप्रेक्ष्य को उजागर करने के लिये पर्दा हटाते हैं। इन संवादों की हमारी समझ अतिरिक्त समय पर परिपक्व हो गई है, परन्तु संवाद और उद्देश्य अभी भी मसीह में विश्वास के द्वारा धार्मिकता है, "तीसरे दूत का संवाद शाश्वत सत्य में।"– Ellen G. White, Evangelism, p. 190. दूसरे शब्दों में हमारे वर्तमान सच्चाई के संवाद के अंतर्भाग में, संवाद जो हमें संसार को सुनाने को बुलाया गया है, यीशु और उसका महान बलिदान हमारे लिये खड़े होते हैं।

पढ़ें प्रकाशितवाक्य 14: 6-12. इन संवादों का आशय क्या है? यह संसार को क्या कह रहे हैं? इन संवादों से संबंधित कौन-सी जिम्मेदारी हम पर आती है, और भण्डारीपन किस प्रकार मेल खाता है?

_____

_____

सेवेंथ-डे-ऐडवेंटिस्टों के रूप में, हमारा लक्ष्य मसीह के दूसरे आगमन की तैयारी के लिये तीन दूतों के संदेशों की सच्चाई को पेश करना है। अनन्तकाल के लिये एक निर्णय लेने की लोगों में क्षमता होनी चाहिए। भण्डारीपन की भूमिका परमेश्वर के साथ लक्ष्य में एक भागीदारी है (2कुरि० 5: 20, 6: 1-4)।

"खास अर्थ में सेवेंथ-डे ऐडवेंटिस्ट लोग इस संसार में पहरेदार और प्रकाश वाहक के रूप में नियुक्त हैं। नाश होते संसार के लिये अंतिम चेतावनी देना उन्हें सौंपा गया है। परमेश्वर के वचन से उन पर अद्‌भुत ज्योति चमक रही है। उन्हें बड़ा ही पवित्र महत्त्व का एक काम दिया गया है – पहले, दूसरे एवं तीसरे दूत के संवादों को प्रचार करना। यहाँ पर कोई दूसरा काम नहीं जो इतने बड़े महत्त्व का है। उन्हें अपने ध्यान को आत्मसात करने के लिये किसी चीज को अनुमति नहीं देना है।" – Ellen G. White, Testimonies for the Church, Vol. 9, p, 19.

एक पहिये का वह किनारा भूमि के साथ सम्पर्क के बिन्दु के नजदीक है और तीन दूतों के संवादों के लक्ष्य का प्रतिनिधित्व करता है। उनका लक्ष्य धर्मविज्ञान संबंधी आशय के खिलाफ सुरक्षा प्रदान करना है और हमारी जिम्मेदारी को अन्तिम समय की घटनाओं में चिह्नित करता है। हमें संसार में ऐलान करते हुए इस संवाद के भण्डारी होना है।

जैसे हम अंतिम दिन की घटनाओं के विषय सोचते हैं, तालिकाओं और तारीखों में अधिक रुचि लेना इतना सहज है। उनकी अपनी भूमिका है, परन्तु किस प्रकार जैसे कि हम इस संवाद को संसार में प्रचार करना चाहते हैं, क्या हम आश्वस्त हो सकते हैं कि हम यीशु और उसके बलिदान को हमारे लिये सामने और केंद्र में रखते हैं?

बृहस्पतिवार **मार्च 8**

भण्डारीपन

मसीह हम से एक पवित्र जीवन जीने की चाह रखता है। उसका जीवन पवित्रता का दृष्टान्त देता है और यह कि सर्वश्रेष्ठ भण्डारीपन कैसा दिखना चाहिए (इब्रा० 9: 14)। हमें हमारे जीवनों को इस प्रकार व्यवस्थित करना

चाहिए जो परमेश्वर को सुखद लगे, उन सभी चीजों को जो हमें सौंपे गये हैं सम्मिलित करते हुए कि हम कैसे देखभाल करते हैं। भण्डारीपन उस पवित्रता की एक अभिव्यक्ति है।

1पतरस 1: 15-16 को इब्रानी 12: 14 से तुलना करें। "पवित्र बनो" और "पवित्रता" का क्या अर्थ है? यह हमारे भण्डारीपन को कैसे जोड़ता है?

_____

_____

रोमियों ने पता लगाया कि एक रथ चक्र अधिक दिनों तक चल सकता था, यदि लोहे की पट्टी इसके किनारों में लगाई जाती। शिल्पकार ने धातु को गर्म किया ताकि इसे (चक्र के) किनारा में लगाया जा सके। ठण्डे पानी द्वारा इसे सिकुड़ दिया गया ताकि मजबूती से फिट हो सके। लोहे की पट्टी तब सड़क के सम्पर्क में आयी जैसे ही चक्र घूमने लगा।

किनारे में लोहे की पट्टी भण्डारीपन की अवधारणा को अभिव्यक्त कर सकती है। यह सच्चाई का क्षण है, जहाँ पर हमारे आत्मिक जीवन हमारे व्यावहारिक जीवन के खिलाफ रगड़ खाते हैं। यह वह है जहाँ पर हमारा विश्वास सफलताओं और असफलताओं के द्वारा जीवन के उतार चढ़ाव से मुलाकात करता है। यह वह है जहाँ पर हमारे विश्वास दैनिक जीवन की छीना-झपटी, उलट-पलट में वास्तविक बन जाते हैं। हम कौन हैं और क्या करते हैं भण्डारीपन उसका बाहरी आवरण है। यह एक जीवन के सुप्रबंध का और हमारे आचरण का एक गवाह है। हमारे प्रति दिन के कर्म जो मसीह को प्रगट करते हैं पहिये (चक्र) पर के लोहे के समान है जो सड़क को छूता है।

कर्म सशक्त हैं और मसीह में समर्पण के द्वारा नियंत्रित होने चाहिए। हमें इस आश्वासन और प्रतिज्ञा के साथ जीना है: "जो मुझे सामर्थ्य देता है उसमें मैं सब कुछ कर सकता हूँ" (फिलि० 4: 13)।

"पवित्र आत्मा के कार्य के द्वारा आत्मा की पवित्रता मानवता में मसीह के स्वभाव का आरोपण है। सुसमाचार धर्म मसीह में जीवन है – एक जीवित सक्रिय सिद्धांत। यह मसीह का अनुग्रह है, चरित्र में प्रकट हुआ और भले कामों में गढ़ा गया। सुसमाचार के सिद्धान्त व्यावहारिक जीवन के किसी विभाग से असंबद्ध नहीं हो सकता है। मसीही अनुभव की प्रत्येक पंक्ति और श्रम मसीह के जीवन का एक प्रतिनिधित्व होना है।"– Ellen G. White, Christ's object lesson, p. 384.

आपके प्रति दिन का जीवन, आपके प्रति दिन के अस्तित्व पर निगाह डालें। इसके विषय क्या है आपमें मसीह की वास्तविकता प्रकट होती है, आपमें कार्यान्वयन होती है आपको एक नया प्राणी बनाती है? आपको कौन से जागरूक चुनाव की जरूरत है ताकि उसकी पवित्रता आपमें प्रकट हुए देखें?

शुक्रवार **मार्च 9**

अतिरिक्त अध्ययन : कभी-कभी रथ के पहिये के लोहे दुबारा फिट होने वाली पट्टी के होते थे क्योंकि धातु का सड़क पर रगड़न के द्वारा उसपर फैलाव आ जाता था। यह दुबारा फिट करने का काम बहुत कठिन होता था और लोहे की पट्टी को हथौड़े से मारा जाता था। यह लोहे की पट्टी का दुबारा फिट होना भण्डारीपन को व्यावहारिक पवित्रीकरण के रूप में दर्शाता है। यह मसीह के दिमाग का होना है जब प्रत्येक बड़े या छोटे जीवन के पहलू को प्रत्युत्तर दे रहा है, जौभी कि प्रक्रिया कठिन और दर्दनाक हो सकता है। चाहे यह प्रक्रिया हमारे पैसे के व्यवहार करने, परिवारिक संबंध, या रोजगार से संबंध रखता हो, कुछ को नाम करने से हो, मसीह की इच्छा में सबों को प्रत्युत्तर देना है। कभी-कभी जैसे कि हम सब कोई भली-भांति जानते हैं, हम इस पाठ को केवल कुछ जोरदार प्रहार के द्वारा ही सीख सकते हैं।

लोहे को पुन: फिट करना सहज नहीं है। न ही मानव चरित्र को दुबारा ठीक करना सहज है। पतरस के अनुभव पर विचार करें। वह यीशु के साथ हर जगह रहा, परन्तु उसे यीशु के मुँह से इन शब्दों की उम्मीद नहीं थी: "परन्तु मैंने तेरे लिये विनती की कि तेरा विश्वास जाता न रहे; और जब तू फिरे, तो अपने भाइयों को स्थिर करना" (लूका 22: 32)। अधिक देर बाद नहीं यीशु को इनकार करने के बाद पतरस के जीवन में एक बदलाव था, लेकिन केवल एक बहुत ही दर्दनाक और कठिन अनुभव के बाद। एक अर्थ में उसका भण्डारीपन पुन: फिट हुआ। पतरस का नये सिरे से हृदय परिवर्तन हो चुका था, परन्तु केवल कुछ वास्तविक प्रहार के बाद उसका जीवन एक नयी दिशा में अगुवाई करने को जा रहा था।

विचार-विमर्श के लिये प्रश्न :

1. यीशु के निर्देश के साथ व्यावहारिक पवित्रीकरण को क्या करना है "अपने आप से इनकार करे और प्रति दिन अपनी क्रूस उठाए हुए मेरे पीछे हो ले"? लूका 9: 23. किस चीज को क्रूसित किया गया है?

गला० 6:14. पवित्रीकरण की प्रक्रिया को यह किस प्रकार स्पष्ट करता है? परमेश्वर की तरह सोचने में व्यावहारिक पवित्रीकरण हमें सीखने में कैसे मदद करता है? 1कुरि० 2:16.

2. आपका स्वयं का अनुभव क्या रहा है, इस संबंध में कि मसीही जीवन और परमेश्वर को पीछा करने के विषय किस प्रकार दर्दनाक परीक्षाएँ सशक्त पाठ पढ़ा सकती हैं? कक्षा में जो आरामदायक महसूस करते हैं अपने अनुभव को बतलाने कहें और उन्होंने क्या सीखा है। हम एक दूसरे के अनुभव से क्या सीख सकते हैं?

3. दूसरे विश्वासों के विषय सोचें जो हम सेवेंथ-डे- ऐडवेंटिस्ट के तौर पर धारण करते हैं, यह सब्त हो सकता है, मृतकों की स्थिति, सृष्टि, दूसरा आगमन, इत्यादि। सामान्य तौर पर किस तरह से ये भिन्न-भिन्न विश्वास हमारे जीवन के आचरण को प्रभावित करना चाहिए?